

बदलते कृषि भूमि उपयोग का एक अध्ययन: संतकबीर नगर जिला (उत्तर प्रदेश) का एक प्रतीक अध्ययन

डॉ० अमित राणा
असिस्टेंट प्रोफेसर
(भूगोल विभाग) के० आर० पी० जी० कॉलेज मथुरा
ईमेल: 10ranaamit@gmail.com

सारांश: प्रस्तुत शोध लेख भारत के उत्तर प्रदेश के संतकबीर नगर जिला में 2001 से 2021 तक के बदलते भूमि उपयोग प्रतिरूप का अध्ययन करता है। पिछले कुछ वर्षों में भूमि उपयोग परिवर्तन के पैटर्न और प्रवृत्ति को समझने के लिए जिला सांख्यिकी पुस्तिका से भूमि उपयोग डेटा का विश्लेषण किया गया। अध्ययन से पता चला है कि शहरीकरण, कृषि और जल निकायों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जबकि पिछले कुछ वर्षों में वन क्षेत्र में कमी आई है। अध्ययन के निष्कर्ष में पर्यावरण को संरक्षित करते हुए प्राकृतिक संसाधनों के कुशल और प्रभावी उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए स्थायी भूमि उपयोग योजना और प्रबंधन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। प्रस्तुत शोध लेख नीति निर्माताओं को स्थायी भूमि उपयोग प्रबंधन और क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक जानकारी और अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

प्रमुख शब्द: भूमि उपयोग, पैटर्न, योजना, विकास, टिकाऊ, उपयोगिता, आर्थिक संसाधन, प्रबंधन।

परिचय:

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण, बुनियादी ढांचे के विकास और जलवायु परिवर्तन जैसे विभिन्न कारकों के कारण इसका भूमि उपयोग पैटर्न समय के साथ बदल रहा है। प्रस्तुत शोध लेख में 2001, 2011, 2021 के उत्तर प्रदेश राज्य के संतकबीर नगर जिले में बदलते कृषि भूमि उपयोग पैटर्न पर ध्यान केंद्रित करेंगे। संतकबीर नगर जिला उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में स्थित है और कृषि क्षेत्र स्थानीय अर्थव्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है। भारत के बदलते कृषि भूमि उपयोग पैटर्न पर कई कारकों के प्रभावों को पूर्व के शोध में नोट किया गया है। उदाहरण के लिए, चंद्रन एट अल. (2016) ने पाया कि शहरीकरण कृषि भूमि को गैर-कृषि भूमि में बदलने में एक प्रमुख योगदानकर्ता था। कृषि भूमि में कमी को बुनियादी ढांचे जैसे सड़कों, मोटर वे और हवाई अड्डों के विस्तार के लिए भी जिम्मेदार ठहराया गया है (नर्मदा व अन्य 2017)। फसल की पैदावार और खेती के लिए उपयुक्तता पर इसके प्रभाव के कारण, जलवायु परिवर्तन भी कृषि भूमि उपयोग के पैटर्न को बदलने में एक प्रमुख निर्धारक साबित हुआ है (कुमार व अन्य 2018)। जब से पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति और इसके विकास की प्रक्रिया शुरू हुई है, तब से भूमि की उपलब्धता और महत्व के संदर्भ में चर्चा और शोध शुरू हो गए हैं, यही कारण है कि भूमि की उपयोगिता इसके सापेक्ष रूप के बजाय प्रकृति में निरपेक्ष है (तिवारी, आर. सी., 2014)। वही जब भूमि की उपयोगिता पर चर्चा की जाती है तो इसका मानवीय संदर्भ महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि मनुष्य भूमि उपयोग पैटर्न को बदलने का प्रमुख कारक रहा है। भूमि किसी भी राष्ट्र की सभ्यता और संस्कृति के विकास का आधार है और यह विकास मूल्यवान भूमि की उपलब्धता से सुनिश्चित होता है। किसी भी राष्ट्र की संस्कृति और सभ्यता को किस हद तक विकसित किया जा सकता है, यह भूमि की उपलब्धता पर आधारित है।

भारत की अर्थव्यवस्था हमेशा से ही कृषि पर आधारित रही है, जो लाखों लोगों की आजीविका का समर्थन करती है और यह सुनिश्चित करती है कि देश की बढ़ती आबादी को भोजन तक पहुँच मिले। हालाँकि, कई सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय कारण भारत के कृषि परिदृश्य में काफी उथल-पुथल मचा रहे हैं। भारत के बदलते कृषि भूमि उपयोग पैटर्न का ग्रामीण आजीविका, खाद्य उत्पादन और पर्यावरणीय स्थिरता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। भारत ने पिछले कुछ दशकों में जबरदस्त जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण और शहरीकरण का अनुभव किया

है, जिसने कृषि के अलावा अन्य उपयोगों के लिए भूमि की मांग को बढ़ा दिया है। नतीजतन, कृषि संपत्ति को वाणिज्यिक, औद्योगिक और आवासीय उपयोगों में बदलने की मांग की गई है। कृषि लंबे समय से भारत के आर्थिक और सामाजिक ताने-बाने का एक प्रमुख घटक रही है, जो देश के इतिहास और चरित्र में दृढ़ता से समाहित है। लेकिन भारत में तेजी से हो रहे आर्थिक और जनसांख्यिकीय परिवर्तनों के कारण कृषि क्षेत्र में भूमि उपयोग पैटर्न में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिल रहा है। यह अध्ययन संतकबीर नगर के कृषि भूमि उपयोग के बदलते पैटर्न का गहन विश्लेषण प्रदान करने के लक्ष्य के साथ इस परिवर्तन की जटिल प्रक्रियाओं की जांच करता है। पिछले कई दशकों में भारत के कृषि परिवेश में काफी बदलाव आया है, जिसमें भूमि आवंटन, फसल पैटर्न और कृषि तकनीकों में बदलाव देखे गए हैं। आर्थिक वैश्वीकरण, तकनीकी सुधार, विनियामक हस्तक्षेप, पर्यावरणीय बदलाव और उपभोक्ता स्वाद में बदलाव सहित कई परस्पर संबंधित चर इस परिवर्तन को प्रेरित कर रहे हैं। नीति निर्माताओं, विद्वानों और हितधारकों को इन बदलावों की बारीकियों को समझना चाहिए क्योंकि इनका ग्रामीण आजीविका, खाद्य सुरक्षा और सतत विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन का लक्ष्य उन बुनियादी पैटर्न की पहचान करना है जो संतकबीर नगर के कृषि भूमि उपयोग में बदलाव ला रहे हैं। यह अध्ययन एक बहु-विषयक दृष्टिकोण का उपयोग करके इस बदलते परिदृश्य में योगदान देने वाले सामाजिक-आर्थिक, पर्यावरणीय और नीतिगत पहलुओं की जांच करना चाहता है। इस अध्ययन का उद्देश्य कठोर डेटा विश्लेषण और व्याख्या के माध्यम से भूमि उपयोग पैटर्न में क्षेत्रीय और लौकिक परिवर्तनशीलता पर प्रकाश डालकर भारतीय कृषि के भविष्य के पाठ्यक्रम को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना है। इसके अलावा, अध्ययन इस बात की जांच करेगा कि कृषि भूमि उपयोग में बदलाव से भारतीय अर्थव्यवस्था, समाज और पर्यावरण के कई पहलू कैसे प्रभावित होते हैं मौजूदा रुझानों की स्थिरता का आकलन करने के लिए, संशोधित भूमि उपयोग पैटर्न के पारिस्थितिक प्रभावों जैसे कि जल उपभोग, मृदा स्वास्थ्य और जैव विविधता में संशोधनों पर भी ध्यान दिया जाएगा। अनुसंधान की बदलती गतिशीलता को समझना और उसमें समायोजन करना न केवल वर्तमान स्थिति को रिकॉर्ड करना और उसका मूल्यांकन करना है, बल्कि संभावित भविष्य के परिदृश्यों में अंतर्दृष्टि प्रदान करना भी है, खासकर जब भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण अभिनेता के रूप में खुद को स्थापित करता है।

विषय की गहन समझ प्रदान करने के लिए, अध्ययन सांख्यिकीय मॉडलिंग, केस स्टडी और भौगोलिक विश्लेषण के साथ मात्रात्मक और गुणात्मक अनुसंधान दृष्टिकोणों को जोड़ता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बदलते भूमि उपयोग पैटर्न के भौगोलिक वितरण को मैप करने और प्रदर्शित करने के लिए, जीआईएस टूल का उपयोग किया जाएगा। समय बीतने के साथ, इन उद्देश्यों की प्रकृति बदलती रहती है, जिसके कारण भूमि उपयोग पैटर्न में भी परिवर्तन देखा जाता है। मानव आर्थिक विकास के प्रारंभिक चरण में, भूमि का उपयोग मानव की आवश्यक गतिविधियों यानी कृषि, कपड़े और आश्रय के लिए किया जाता था। समय बीतने के साथ-साथ मानव आबादी में वृद्धि हुई, भूमि की मांग भी बढ़ी, जिसके कारण भूमि पर दबाव अपेक्षाकृत बढ़ गया (खत्री, हरीश कुमार 2020)।

उपयोग पैटर्न में मिट्टी की उर्वरता, क्षेत्र की राहत, जलवायु कारक, सामाजिक-आर्थिक कारकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आर्थिक विकास, बुनियादी ढांचा परियोजनाएं जैसे कि चार लेन की सड़कें, इमारतें, भूमि पर झील खोदने के माध्यम से जल संसाधन प्रबंधन, जिले का बाजार विस्तार, आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता ने जौनपुर जिले में भूमि उपयोग पैटर्न में बदलाव के लिए बाजार को प्रभावित किया है।

अध्ययन क्षेत्र:

संत कबीर नगर जिले की स्थापना वर्ष 1997 में उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में हुई थी। जिले का नाम संत कबीर के नाम पर रखा गया था, जो एक प्रसिद्ध संत और दार्शनिक कवि थे और वह जिले के मगहर शहर में रहते थे। यह बस्ती जिले के 131 गांवों और सिद्धार्थनगर जिले के 161 गांवों से मिलकर बना है। यह जिला 26°47' और 26°79' उत्तरी अक्षांश और 83°30' और 83°45' पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। निकटवर्ती जिले पूर्व में गोरखपुर, पश्चिम में बस्ती, उत्तर में सिद्धार्थ नगर और दक्षिण में अंबेडकर नगर हैं। जिला सांख्यिकी विभाग के अनुसार जिले का क्षेत्रफल 1649 वर्ग किलोमीटर है। जिले को, अपनी स्पष्ट एकरूपता के बावजूद, स्थलाकृतिक रूप से कई अलग-अलग क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है, अर्थात् दक्षिण में घाघरा की

निचली घाटी, जो उस नदी से उसकी सहायक नदी कुनवाना तक फैली हुई है; कुनवाना नदी और राप्ती के बीच केंद्रीय उच्चभूमि; और राप्ती और मनवर के बीच निचली और खराब जल निकासी वाली धान की पट्टी है। जिले में कोई महत्वपूर्ण खनिज उपलब्ध नहीं है। हालाँकि, कंकर के पर्याप्त भंडार जिले में उपलब्ध है। जिले के कुछ इलाकों से रेह की भी सूचना मिलती है जिसका उपयोग सफाई के लिए किया जाता है जिले का वन क्षेत्र 4347 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है। इनमें मुख्य रूप से जिले के उत्तर-पश्चिम और मध्य भाग में संकेन्द्रित है। खलीलाबाद संत कबीर नगर का मुख्यालय है। प्रशासनिक उद्देश्य के लिए जिले को 3 उपमंडल, 3 तहसीलों, 9 में विभाजित किया गया है इसमें 648 ब्लॉक हैं और 648 ग्राम पंचायतें तथा 1576 राजस्व गांव हैं। यहाँ यह ध्यान देने वाली बात है की 2001 से पहले सात विकासखंड हुआ करते थे लेकिन 2001 के सेन्सस के बाद नौ विकासखंड बने जिनमे से सबसे बाद में बेलहर कला और पौली का निर्माण हुआ।

अध्ययन उद्देश्य:

1. संत कबीर नगर जिले के कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन लाने वाले कारकों की जांच व विश्लेषण करना।
2. प्रस्तुत लेख का उद्देश्य भूमि उपयोग में परिवर्तन की प्रवृत्तियों और उनके सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों का पता लगाना होगा।
3. इन परिवर्तनों के कारकों और निहितार्थों की पहचान करना तथा क्षेत्र में कृषि भूमि उपयोग पैटर्न में परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए उपयुक्त रणनीति प्रदान करना।

इसके अतिरिक्त, प्रस्तुत लेख का उद्देश्य भारत के संदर्भ में कृषि, भूमि उपयोग और विकास से संबंधित व्यापक मुद्दों की समझ में योगदान देना होगा।

विधितंत्र:

डेटा का स्रोत द्वितीयक है जिसे सरकारी डेटाबेस से प्राप्त किया गया है, जैसे कि जिला जनगणना पुस्तिका, कृषि विज्ञान केंद्र, स्पाइडर रिपोर्ट और भारत सरकार की जनगणना वेबसाइट। विभिन्न तालिकाओं, मानचित्रों और डेटा का उपयोग विश्लेषण और चित्रण के लिए किया जाता है। इसमें संत कबीर नगर जिले के सभी ब्लॉक के बदलते कृषि प्रतिरूप का अध्ययन किया गया है तथा यह शोध लेख विश्लेषणात्मक तथा वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है।

तालिका संख्या 1: संत कबीर नगर जिले का भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2001 2011 और 2021)

क्र.सं.	भूमि उपयोग का प्रकार	वर्ष 2001 (हेक्टेयर में)	वर्ष 2011 (हेक्टेयर में)	वर्ष 2021 (हेक्टेयर में)	अंतर 2001- 2011 (%) में)	अंतर 2011-2021(%) में)
1.	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	176274	174810	174810	-0.83	00
2.	जंगल	4364	4374	4361	0.22	-0.31
3.	कृषि बंजर भूमि	1611	2402	2175	49.11	-9.45
4.	वर्तमान परती	5833	8331	4963	42.83	-40.48
5.	अन्य परती	2729	3165	5257	15.98	66.11
6.	बंजर और आकृषित भूमि	3239	1854	1695	-76.66	-8.58
7.	कृषि के इतर उपयोग हेतु भूमि	20865	28715	31208	37.62	8.68
8.	चारागाह	264	1274	884	382.58	-30.61
9.	पेड़ों और झाड़ियों का क्षेत्रफल	2175	4623	3211	112.55	-30.54
10.	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	135194	121219	121056	-10.34	-0.13
11.	शुद्ध सिंचित	91537	100836	113801	10.16	12.86

स्रोत: जिला जनगणना पुस्तिका, संत कबीर नगर जिला

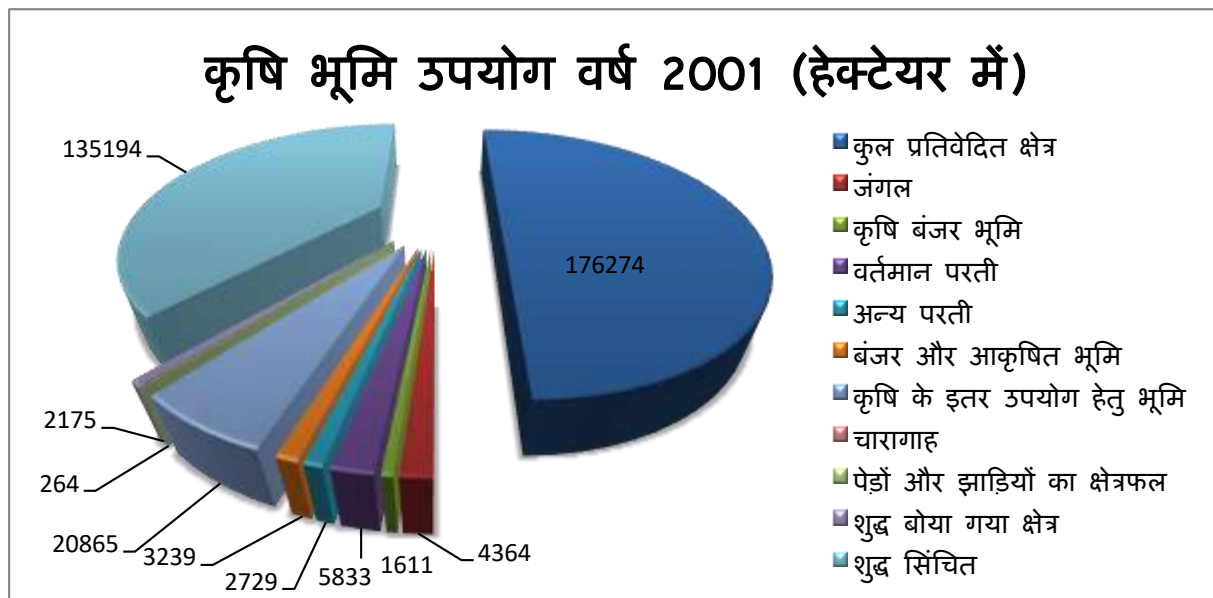
तालिका संख्या 2: संत कबीर नगर जिले का भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2001)

स्रोत: जिला जनगणना पुस्तिका, संत कबीर नगर जिला

क्र. सं.	ब्लाक	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	जंगल	कृषि बंजर भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	बंजर और आकृषित भूमि	कृषि के इतर उपयोग हेतु भूमि	चारागाह	पेड़ों और झाड़ियों का क्षेत्रफल	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	शुद्ध सिंचित
1.	सेमरियावा	20630	463	157	543	206	488	2885	29	204	15655	12464
2.	मेहदावल	17820	431	178	1031	355	462	1878	16	211	13258	10070
3.	बघौली	17649	611	55	431	243	342	2848	43	269	12807	11884
4.	खलीलाबाद	18639	544	167	596	398	355	1758	47	116	14658	2653
5.	नाथनगर	32738	386	81	864	383	318	2835	38	275	27558	12834
6.	हैसर बाजार	39087	655	512	1243	516	727	4945	50	334	30105	18242
7.	सांथा	27937	1274	436	1094	596	526	3110	41	731	20129	12620
कुल ग्रामीण		174500	4364	1586	5802	2697	3218	20259	264	2140	134170	90767
कुल शहरी		1774	0	25	31	32	21	606	0	35	1024	770
कुल जिला		176274	4364	1611	5833	2729	3239	20865	264	2175	135194	91537

2001 में कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप:

वर्ष 2001 में जिले के कुल रिपोर्ट किए गए क्षेत्रफल में सांथा ब्लॉक में वन क्षेत्र का प्रतिशत सबसे अधिक था, जबकि नाथनगर ब्लॉक में वन क्षेत्र का प्रतिशत सबसे कम था। सबसे अधिक वन क्षेत्र सुईथाकला ब्लॉक में ही था, जबकि अन्य विकासखंड में वन का घटता क्रम बघौली, खलीलाबाद, सेमरियावा, मेहदावल में कम वन क्षेत्र है हैसर बाजार में कृषि बंजर भूमि का सबसे ज्यादा क्षेत्रफल है और बघौली में सबसे कम। हैसर बाजार ब्लॉक में वर्तमान परती भूमि का सबसे ज्यादा और बघौली में वर्तमान परती क्षेत्र का सबसे कम क्षेत्रफल है। सांथा ब्लॉक में अन्य परती भूमि का सबसे ज्यादा क्षेत्रफल है और सेमरियावा में सबसे कम है। हैसर बाजार ब्लॉक में सबसे ज्यादा ऐसी जमीन है जो कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है जबकि नाथनगर ब्लॉक में सबसे कम है।



हैसर बाजार ब्लॉक में सबसे ज्यादा ऐसी जमीन है जिसका उपयोग कृषि के अलावा अन्य कार्यों के लिए किया जाता है और खलीलाबाद में सबसे कम ऐसा क्षेत्रफल है जो कृषि के अलावा अन्य कार्यों के लिए उपयोग किया जाता है। हैसर बाजार ब्लॉक में सबसे ज्यादा चारागाह भूमि है जबकि मेहदावल में चारागाह के अंतर्गत 20 हेक्टेयर से भी कम जमीन है। पेड़ों और झाड़ियों का

क्षेत्रफल सबसे ज्यादा सांथा ब्लॉक में पाया जाता है और खलीलाबाद में सबसे कम यानी 116 हेक्टेयर भूमि व्याप्त है हालांकि, शुद्ध सिंचित क्षेत्र शाहगंज में सबसे अधिक और धरमपुर ब्लॉक में सबसे कम है। हालांकि, शुद्ध सिंचित क्षेत्र हैसर बाज़ार में सबसे अधिक और खलीलाबाद ब्लॉक में सबसे कम है।

तालिका संख्या 3: संत कबीर नगर जिले का भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2011)

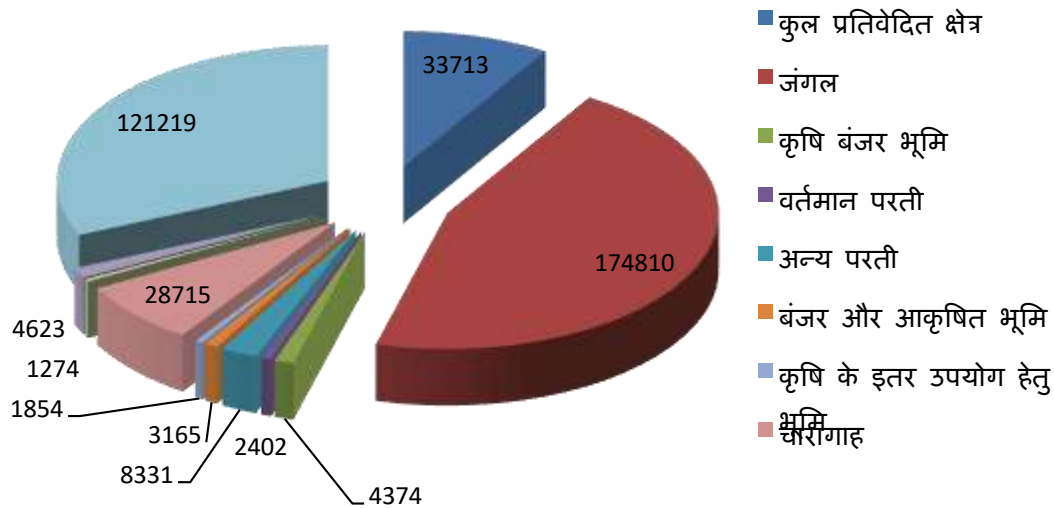
क्र.सं.	ब्लाक	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	जंगल	कृषि बंजर भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	बंजर और आकृषित भूमि	कृषि के इतर उपयोग हेतु भूमि	चारागाह	पेड़ों और झाड़ियों का क्षेत्रफल	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	शुद्ध सिंचित
1.	सेमारियावा	22361	473	69	590	336	170	3458	5	562	16698	16360
2.	मेहदावल	19936	249	70	1202	520	192	3024	14	562	14103	11252
3.	बघौली	19472	645	1013	556	425	122	3478	15	688	12530	11160
4.	खलीलाबाद	20145	346	126	699	344	160	3141	12	542	14775	13814
5.	नाथनगर	20915	259	168	675	449	183	2928	28	1075	15150	11681
6.	हैसर बाजार	22561	409	199	1081	287	397	3819	13	648	15708	12607
7.	सांथा	16395	1420	101	942	252	143	2651	7	287	10592	9454
8.	बेलहर कला	16630	573	208	1563	275	131	2604	25	226	11025	6685
9.	पौली	14062	0	438	858	277	345	3053	7	30	9054	6932
कुल ग्रामीण		172477	4374	2392	8166	3165	1843	28156	126	4620	119635	99945
कुल शहरी		2333	0	10	165	0	11	559	1	3	1584	891
कुल जिला		174810	4374	2402	8331	3165	1854	28715	127	4623	121219	100836

स्रोत: जिला जनगणना पुस्तिका, संत कबीर नगर जिला

2011 में कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप:

वर्ष 2011 में जिले के कुल प्रतिवेदित किए गए क्षेत्रफल में सांथा ब्लॉक में वन क्षेत्र का प्रतिशत सबसे अधिक था, जबकि पौली ब्लॉक में वन क्षेत्र सबसे कम अर्थात 0 हेक्टेयर था। बघौली में कृषि बंजर भूमि का सबसे ज्यादा क्षेत्रफल है, सेमारियावा में सबसे कम है। बेलहर कला ब्लॉक में वर्तमान परती भूमि का सबसे ज्यादा क्षेत्रफल है और बघौली में वर्तमान परती क्षेत्र का सबसे कम क्षेत्रफल है। मेहदावल ब्लॉक में अन्य परती भूमि का सबसे ज्यादा क्षेत्रफल है और सांथा में सबसे कम है। हैसर बाज़ार ब्लॉक में सबसे ज्यादा ऐसी भूमि है जो कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है जबकि बघौली ब्लॉक में सबसे कम है। हैसर बाज़ार ब्लॉक में सबसे ज्यादा ऐसी भूमि है जिसका उपयोग कृषि के अलावा अन्य कार्यों के लिए किया जाता है और बेलहर कला में सबसे कम ऐसा क्षेत्रफल है जो कृषि के अलावा अन्य कार्यों के लिए उपयोग किया जाता है। नाथनगर ब्लॉक में सबसे ज्यादा चारागाह भूमि है जबकि सेमारियावा में चारागाह के अंतर्गत 5 हेक्टेयर भूमि है। पेड़ों और झाड़ियों का क्षेत्रफल सबसे ज्यादा नाथनगर ब्लॉक में पाया जाता है और पौली में सबसे कम यानी 30 हेक्टेयर भूमि है। शुद्ध बोया गया क्षेत्र सबसे ज्यादा सेमारियावा ब्लॉक में पाया गया जबकि पौली ब्लॉक में सबसे कम भूमि है, शुद्ध सिंचित क्षेत्र सेमारियावा में सबसे अधिक और बेलहर कला ब्लॉक में सबसे कम है।

कृषि भूमि उपयोग वर्ष 2011 (हेक्टेयर में)



तालिका संख्या 4: जौनपुर जिले का भूमि उपयोग प्रतिरूप (वर्ष 2021)

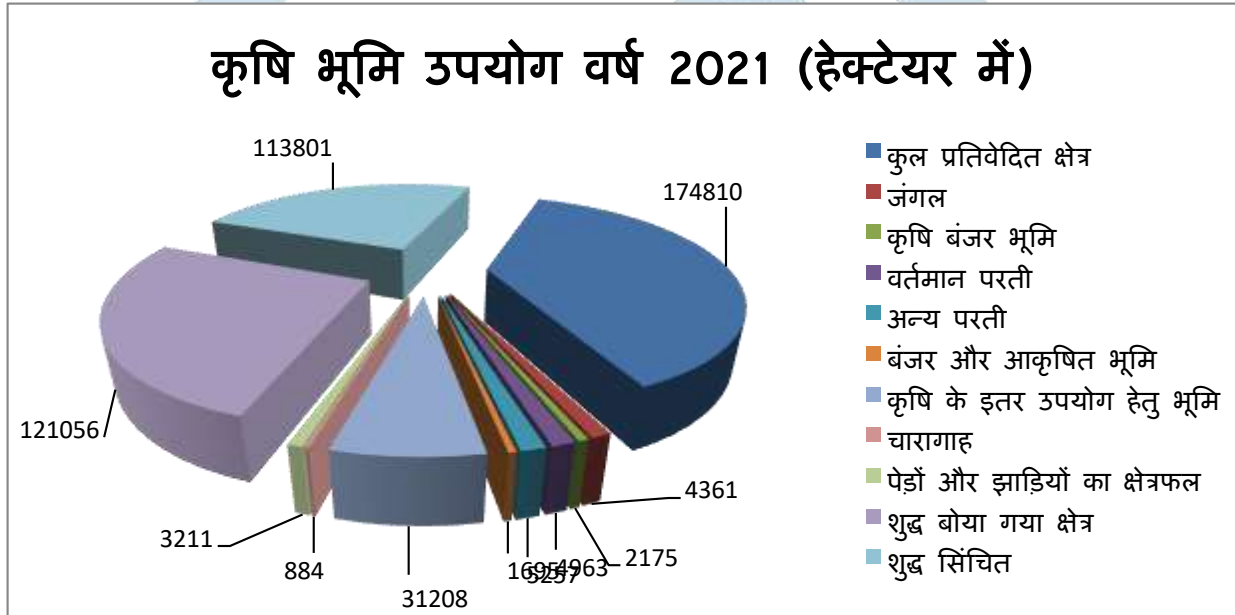
क्र.सं.	ब्लाक	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	जंगल	कृषि बंजर भूमि	वर्तमान परती	अन्य परती	बंजर और आकृषित भूमि	कृषि के इतर उपयोग हेतु भूमि	चारागाह	पेड़ों और झाड़ियों का क्षेत्रफल	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	शुद्ध सिंचित
1.	सेमरियावा	22272	472	167	538	578	176	3794	100	409	16038	13434
2.	मेहदावल	18480	252	159	514	571	196	3160	100	437	13091	12098
3.	बघौली	18963	645	546	555	623	124	3814	100	440	12116	11956
4.	खलीलाबाद	19777	346	187	453	596	156	3283	100	424	14232	13585
5.	नाथनगर	19536	259	215	505	617	192	3244	100	351	14053	12931
6.	हैसर बाजार	21131	409	236	544	600	235	4161	100	434	14412	13853
7.	सांथा	18089	1405	183	503	617	148	3140	100	375	11618	11571
8.	बेलहर कला	17403	573	169	693	602	122	2961	100	188	11995	11592
9.	पौली	17037	0	307	616	453	336	3069	83	151	12022	11302
कुल ग्रामीण		172688	4361	2169	4921	5257	1685	30626	883	3209	119577	112322
कुल शहरी		2122	0	6	42	0	10	582	1	2	1479	1479
कुल जिला		174810	4361	2175	4963	5257	1695	31208	884	3211	121056	113801

स्रोत: जिला जनगणना पुस्तिका, संत कबीर नगर जिला

2021 में कृषि भूमि उपयोग प्रतिरूप:

2021 में, जिले के कुल रिपोर्ट किए गए क्षेत्रफल में सेमारियावा ब्लॉक में क्षेत्रफल का प्रतिशत सबसे अधिक है जबकि पौली ब्लॉक में क्षेत्रफल सबसे कम है। सबसे बड़ा वन क्षेत्र सांथा ब्लॉक में ही देखा गया, जबकि पौली में वनों का शून्य क्षेत्र है, जबकि नाथनगर और मेहदावल में 300 हेक्टेयर से भी कम वन क्षेत्र है।

बघौली में कृषि योग्य बंजर भूमि का सबसे अधिक क्षेत्र है, मेहदावल में सबसे कम है। ब्लॉक बेलहर कलां में वर्तमान परती भूमि के अंतर्गत सबसे अधिक भूमि है और खलीलाबाद में वर्तमान परती भूमि के अंतर्गत सबसे कम भूमि है। बघौली ब्लॉक में अन्य परती भूमि के अंतर्गत सबसे अधिक भूमि क्षेत्र है और पौली में सबसे कम है। पौली ब्लॉक में सबसे अधिक ऐसी भूमि है जो कृषि के लिए उपयुक्त नहीं है जबकि बेलहर कलां ब्लॉक में सबसे कम है। हैसर बाज़ार ब्लॉक में सबसे अधिक ऐसी भूमि है जिसका उपयोग कृषि के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए किया जाता है और बेलहर कलां में सबसे कम ऐसा क्षेत्र है जो कृषि के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग किया जाता है। सेमारियावा, मेहदावल, बघौली, खलीलाबाद, नाथनगर, हैसर बाज़ार, सांथा, बेलहर कला इन सभी ब्लॉक में सबसे अधिक चरागाह भूमि है जबकि पौली में 83 हेक्टेयर चरागाह भूमि है। पेड़ों और झाड़ियों का क्षेत्रफल सबसे अधिक बघौली ब्लॉक में पाया जाता है और पौली में सबसे कम यानी 151 हेक्टेयर भूमि है। सबसे अधिक शुद्ध बोया गया क्षेत्र सेमारियावा ब्लॉक में और सबसे कम सांथा ब्लॉक में पाया जाता है, हालांकि शुद्ध सिंचित क्षेत्र हैसर बाज़ार में सबसे अधिक और पौली ब्लॉक में सबसे कम है।



निष्कर्ष:

2001 से 2011 तक कृषि भूमि उपयोग में कालिक परिवर्तन:

2001 से 2011 तक कुल प्रतिवेदित क्षेत्र में 0.83 प्रतिशत की कमी देखी गयी और वन क्षेत्र में 0.22 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी देखी गयी। भूमि उपयोग तकनीकों के उचित कार्यान्वयन के कारण कृषि बंजर भूमि में 49.11 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुयी 2011 में वर्तमान परती भूमि के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में 42.83 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुयी, जबकि दूसरी ओर अन्य परती भूमि में 2001 के मुकाबले लगभग 16 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2001 की तुलना में 2011 में बंजर और अकृषि योग्य भूमि में 76.66 प्रतिशत की कमी आई और अन्य उपयोग के लिए भूमि का उपयोग 2011 में कृषि में 37.62 प्रतिशत की वृद्धि हुई। किसानों की पशुपालन में रुचि अधिक होने के कारण चारागाह के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में 2001 से 382.58 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुयी। 2011 में पेड़ों और झाड़ियों के अंतर्गत आने वाले क्षेत्र में 112.55 प्रतिशत की वृद्धि हुयी। जिले के शुद्ध बोए गए क्षेत्र में लगभग 10 प्रतिशत की कमी देखी गई जबकि शुद्ध सिंचित क्षेत्र में 2011 में लगभग 10 प्रतिशत की वृद्धि देखी गयी।

2011 से 2021 तक कृषि भूमि उपयोग में कालिक परिवर्तन:

2011 से 2021 तक कुल प्रतिवेदित क्षेत्र यथावत रहा। वन क्षेत्र में 0.31 प्रतिशत की कमी हुई तथा कृषि बंजर भूमि में लगभग 10 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2011 से वर्तमान परती भूमि का क्षेत्रफल लगभग 41 प्रतिशत घटा, जबकि दूसरी ओर अन्य परती भूमि में 2011 के मुकाबले 66.11 प्रतिशत की वृद्धि हुई। 2011 की तुलना में बंजर और अनुपयोगी भूमि में केवल 8.58 प्रतिशत की कमी आई तथा कृषि के अलावा अन्य उपयोग की जाने वाली भूमि में 8.68 प्रतिशत की वृद्धि हुई। किसानों की पशुपालन में रुचि घटने के कारण 2001 से चारागाह के क्षेत्रफल में 30.61 प्रतिशत की कमी हुई। 2011 में पेड़ों और झाड़ियों के अंतर्गत आने

वाले क्षेत्र में 30.54 प्रतिशत की कमी आई है। जिले का शुद्ध बोया गया क्षेत्र 0.13 प्रतिशत घट गया, जबकि शुद्ध सिंचित क्षेत्र 2011 में 12.86 प्रतिशत से बढ़ गया।

संदर्भ सूची:-

1. कमलेश, एस.आर. 1966 कृषि भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन गोरखपुर।
2. डॉ. तिवारी, आर.सी. और डॉ. सिंह, वी.एन. 2006: कृषि भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
3. प्रसाद, होशिला, 1989: ज्ञानपुर तहसील के भूमि उपयोग का भौगोलिक अध्ययन (बी.एच.यू. थीसिस)
4. Singh, Savindra, 2011: Environmental Geography, Prayag Pustak Bhawan, Allahabad.
5. समाचार पत्र देशबंधु - 2016
6. हुसैन, मजीद 2006: कृषि भूगोल, रावत प्रकाशन दिल्ली.
7. कुमार, रतन 1999. भूमि उपयोग परिवर्तन एवं नवाचार, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर का प्रबंधन, पृष्ठ संख्या 42-75।
8. खुल्लर, डी.आर. 2015, भूगोल, मैकग्राहिल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 7.7-7.9
9. गौतम, अलका, 2014. संसाधन और पर्यावरण, भारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज, 230-238.
10. चौरसिया, महीप, 2018. सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन एवं ग्रामीण विकास: जौनपुर जिले का भौगोलिक अध्ययन, अनुमोदित प्रस्ताव, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर।
11. जिला सांख्यिकी पत्रिका जनपद गोरखपुर।
12. तिवारी, आर.सी. और सिंह, बी.एन. 2014, कृषि भूगोल, प्रवालिका प्रकाशन, प्रयागराज पृष्ठ संख्या 38-69.
13. मौर्य, एस.डी. 2012. मानव एवं आर्थिक भूगोल, भरदा पुस्तक भवन, प्रयागराज, पृष्ठ संख्या 486-491.
14. बरनवाल, महेश, 2012. भूगोल एक समग्र अध्ययन, कांसमोस प्रकाशन, वजीराबाद, 122-126 दिल्ली.
15. चांदना, आर.सी. और सिद्धू, एम.एस., 1980. जनसंख्या भूगोल का परिचय, कल्याणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.59-62. 20. जिला जनगणना पुस्तिका गोरखपुर